प्रातः क्लास 20-7-68 ओमशान्ति पिताश्री "5भूतों को भगाना है"

ओमशान्तिः बाप बच्चों को कहते हैं, समझाते हैं अन्तर्मुखता इसको कहा जाता है। कुछ भी बोलो नहीं। अपन को आत्मा समझ कर के और बाप को याद करो। यह बाप बैठ शिक्षा देते हैं। और कुछ भी बोलने का नहीं है। सिर्फ समझानी दी जाती है, गृहस्थ व्यवहार में ऐसे रहना है। यह है मन्मनाभव। मुझे याद करो। यह है पहले-पहले पायन्टस। घर में क्रोध भी नहीं करना चाहिए। क्रोध ऐसा है जो पानी का मटकाभी सुख जाता है। क्रोध से मनुष्य अशान्ति बहुत फैलाते हैं। इसलिए गृहस्थ व्यवहार में रहते अपनी शान्ति में रहना है। भोजन खाकर अपने धंधे अथवा आफीस आदि में चले जाना है। वहां भी सायलेन्स में रहना है। सभी कहते हैं हमको शान्ति चाहिए। यह तो बच्चों को बताया है शान्ति का सागर एक ही बाप है। बाप डयरेक्शन देते हैं मुझे याद करो। इसमें बोलने काकुछ भी नहीं है। अन्तर्मुख हो रहना है। आफीस में भी अपना काम भी करना है तो उसमें जास्ती बोलना नहीं होता। बिल्कुल मीठा। कोई को भीदुःख नहीं देना है। लड़ाई आद करना यह भी क्रोध है ना। सब से बड़ा दुश्मन है काम। फिर दूसरा नम्बर में है क्रोध। एक दो को दुःख पहुंचाते हैं। क्रोध से कितनी लड़ाई आदि हो जाती है। बच्चे जानते हैं सतयुग में क्रोध होता ही नहीं। यह है रावणपने की निशानी। क्रोध वाले को ही आसुरी सम्प्रदाय कहा जाता है। भूत की प्रवेशता होती है ना। खुद भी तपता है, औरों को भी तपाता है। जिससे अशान्ति हो जाती है। इसमें बोलना कुछ भी न चाहिए। क्योंकि उन मनुष्यों को तो ज्ञान है नहीं। वह तो क्रोध ही करेंगे। क्रोध वाले साथ क्रोध करने से लड़ाई लग जाती है। बाप समझाते हैं यह बहुत कड़ा भूत है। इनको युक्ति से भगाना है। मुख से कोई कड़वा शब्द निकालना नहीं है। यह बहुत ही नुकसान-कारी है। विनाश भी क्रोधसे ही होता है ना। घर-घर में जहां क्रोध होता है वहां अशान्ति बहुत रहती है। क्रोध किया तो तुम बाप का नाम-बदनाम कर देंगे। इन भूतों को भगाना है। एक बार भगाया तो फिर आधा कल्प के लिए यह भूत होंगे ही नहीं। यह 5विकार अभी फुल फोर्स में है। इस समय ही बाप आते हैं जब कि विकार फुल फोर्स में है। यह आंखें बड़ी क्रिमनल है। जोर से बोलने से मनुष्य तप जाते हैं। और घर को भी तपा देते हैं। क्रोध वाले। याद कर न सके। याद करने वाले सदैव शान्त में रहेंगे। अपने दिल से पूछना है हमारे में भूत तो नहीं है। मोह का भी भूत होता है, लोभ का भी भूत कम नहीं है। यह सभी भूत हैं क्योंकि रावण की सेना है ना। देहअभिमान के लिए बाप कितना याद की यात्रा सिखलाते हैं। इसमें ही मुंझते बहुत हैं। समझते नहीं है क्योंकि भक्ति बहुत की है ना। भक्ति है देह-अभिमान। आधा कल्प देह-अभिमान में रहा है। बाहरमुखता है ना। बाहरमुखता होने कारण अपन को आत्मा भी नहीं समझ सकते हैं। बाप जोर बहुत लगाते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो परन्तु आता ही नहीं। और सभी बातें मानते भी हैं। फिर कह देते हैं याद कैसे करें। कोई चीज़ तो दिखाई नहीं पड़ती। फिर उनको समझाया जाता है तुम अपन को आत्मा समझते हो। यह जानते हो बेहद का बाप है। मुख से शिव शिव वा कुछ भी बोलने का नहीं है। अन्दर में जानते हो ना मैं आत्मा हूं। परमपिता परमात्मा के औलाद तो सभी हैं ना। शान्ति मांगते हैं। शान्ति का सागर तो वह परमपिता परमात्मा ही है। जरूर वरसा भी बहीदेंगे। बाप अभी समझाते हैं मेरे को याद करो तो तुमको शान्ति भी हो जावेगी और शान्ति से जन्म-जन्मान्तर के विकर्म भी विनाश होंगे। बाकी कोई चीज़ है नहीं। कोई इतना बड़ा लिंग भी नहीं है। जैसे आत्मा छोटी है वैसे बाप भी छोटा ही है। याद तो सभी करते ही हैं। हे भगवान, ओ गाड फादर। यह कौन कहता है। शरीर तो नहीं कहता। आत्मा कहती है। आत्मा स्टार मिसल है। अपने बाप को याद करती है। आत्मा कोई बड़ी चीज़ है नहीं। आत्मा है ही छोटा स्टार। वह छोटी बड़ी नहीं होती। परम पिता परमात्मा भी छोटा बड़ा नहीं होता। तो बाप बच्चों को कहते हैं मन्मनाभव। मीठे2 बच्चों अन्तर्मुख हो रहो। यह जो कुछ देखते हो यह सभी खत्म हो जाने का है। बाकी आत्मा शान्ति में रहती है। आत्मा को शान्तिधाम ही जाना है। जब तक आत्मा पवित्र न बनी है तब तक शांत में वा शान्तिधाम में जा न सके। ऋषि-मुनि, साधु-सन्यासी आदि सभी कहते हैं शान्ति कैसे मिलेगी। बाप तो बहुत

सहज युक्ति बतलाते हैं। परन्तु बच्चों मेंबहुत हैं जो शान्त में नहीं रहते हैं। बाबा जानते हैं घरों में रहते हैं, बिल्कुल शान्त नहींरहते। आश्रमों पर थोड़ा टाईम जाते हैं अन्दर में शान्ति हो, बाप को याद करें, वह नहीं। सारा दिन घरमें बखेरा मचाते रहते हैं। तोसेन्टर पर भी आने से शान्त नहीं रह सकते। कुमारियां हैं, कोई कुमार को याद किया तोबस। उनकी मन को कब शान्त हो न सके। बस कुमार की ही याद आती रहेंगी। बाप समझाते हैं मनुष्यों में 5भूत है। कहते हैं ना इन में भूत की प्रवेशता है। वह तो कर के एक भूत, सो भी कब प्रवेश कर लेता है। बाप कहते हैं यह तो 5 भूतों कोहरेक में प्रवेशता है। इन भूतों ने ही तुमकोकंगाल बनाया है। इन भूतों को भगाने लिए ही पुकारते हैं आकर बाबा हमको शान्ति दो। इन भूतों को भगाने की वह युक्ति बताओ। यह भूत तो सभी में है। यह रावणराज्य है ना। सब से कड़ा भूत है काम, क्रोध। बाप आकर भूतों को भगाते है तो उनके एवजे में कुछ मिलना तो चाहिए ना। वह भूत भगाते हैं, मिलता थोड़ेही है कुछ है। कुछ भी नहीं। यह तो बच्चे जानते हैं बाप आते हैं सारे विश्व से भूतों को भगाने। अभी सारी विश्व में सभी में भूतों की प्रवेशता है। देवताओं में कोई भी भूत नहीं होता। न देहअभिमान का, न काम, क्रोध, लोभ मोह, कुछ भी नहीं होता। लोभ का भी भूत कम नहीं है। यह अंडा आऊं, यह करूं। बहुतों में भूत रहते हैं। अपने दिलमें समझते हैं बरोबर हमारे में काम का भूत है। क्रोध का भूत है। तो इन भूतों को भगाने लिए बाप कितना माथा मारते हैं। देह-अभिमान में आने से फिर दिल होती है भाकी पहनुं यह करें। फिर की कमाई चट हो जाती है। क्रोध वाले का भी यह हाल है। क्रोध में आकर बाप को मार देते, बच्चे बाप को मार देते हैं। स्त्री पति को मार डालती है। जेल में जाकरतुम देखोकैसे2 कैसे होते हैं। इन भूतों की प्रवेशता के कारण भारत का क्या होल हो गया है। भारत को जो बड़ा मटका था, जोसोना हीरों आद से भरा हुआ था वहअभी खाली हो गया है। क्रोध के कारण कहते हैं ना पानी का मटका भी सुख जाता है। तो यह भारत का भी ऐसा हाल हुआ है। यह भी कोई नहीं जानते हैं बाप ही आते हैं भूतों को भगाने लिए। जो और कोई भी मनुष्य मात्र भगा न सके। यह 5भूत बड़े ही जबरदस्त हैं। आधा कल्प इनकी प्रवेशता रही है। इस समय तो बात मत पूछो। भल कोई पवित्र रहते हैं परन्तु जन्म तो विकार से ही मिलता है ना। भूत तो है ना। 5भूतों ने भारत को बिल्कुलकंगाल बना दिया है। ड्रामा कैसा बना हुआ है। तो बाप बैठ समझाते हैं। भारतकितना कंगाल बना है। जो खाने के लिए भी पूरा नहीं मिलता है। बाहर से नहीं मंगावे तो सारे भारतमें फैमन हो जाये। भारत के लिए ही बाप समझाते हैं। अभी तुम बच्चों को इस पढ़ाई से कितना धन देते हैं। यहअविनाशी पढ़ाई है जो अविनाशी बाप ही पढ़ाते हैं। समझ सकते हो इन भूतों ने भारत को क्या हाल किया है। यह भी ड्रामा में नूंध है। भक्ति मार्ग में मनुष्यों की कितनी दुर्गति, एकदम सत्यानाश हो गई है। भक्ति की कितनी सामग्री है। और भक्ति काअहंकार कितना है। शंकराचार्य भल कितना भी संस्कृत जानता है परन्तु भक्त तो है ना। शिव का पुजारी है। पुजारी तो वर्थ नाट अपनी हैं। बाबा छोटेपन से ही गीता पढ़ते थे और नारायण की पूजा करते थे। बिल्कुल ही वर्थ नाट आनी थे। काले लगूर थे। कोई काले कोई कोई सफेद। समझ कुछ नहीं है। मैं आत्माहूं वह हमारा बाप है। यह भीसमझ नहीं है। इसलिए पूछते हैं कैसे याद करूं। अरे तुम तो आत्मा हो। भक्ति मार्ग में याद करते आये हो हे भगवान आओ, लिबरेट करो। हमारा गाईड बनो। गाईडनेस मिलमाहे मुक्ति जीवन्मुक्ति के लिए। बाप ही मुक्ति जीवन्मुक्ति में जाने का रास्ता बताते हैं। इस पुरानी दुनिया से तुमको नफरत दिलाते हैं। इस समय सभी की आत्मायें काली हैं। तो उनको गोरा शरीर फिर कैसे मिलेगा। भल कर कर के कई की चमरी सफेद है परन्तु आत्मा तोकाली है ना। जो खुबसुरत सफेद चमरी वाले हैं उनको अपना नशा रहता है। खुद काला भूत होगा परन्तु कहेगा हमको स्त्री सफेदसुहेनी चाहिए। मनुष्यों को यह पता नहीं पड़ता है आत्मा गोरी कैसे बनती है। इसलिए उन्हों को कहा जाता है नास्तिक। जो अपने बाप रचयिता को और रचना के आदि मध्य, अन्त को नहीं

जानते वह नास्तिक हैं। जो जानते हैं वह हुये आस्तिक। मनुष्य होकर और रचयिता बाप को औररचना के आदि मध्य अन्त को नहीं जानते तो जनावर से भी बदतर हुआ ना। बाप कितना अच्छी रीत = तुम बच्चों को बैठ समझाते हैं। हरेक अपने दिलसे पूछे कहां तक हमारे में सफाई है। कहां तक हम अपने को आत्मा समझ मोस्ट बिलवेट बाप को याद करता हूं। याद के बल से ही रावण पर विजय पानी है। इसमें शरीर की बलवानी की बात नहीं। इस समय सभी से बलवान अमेरीका गिने जाते हैं। क्योंकि उनके पास धन-दौलत बारूद आद जास्ती है। तो वह बल हो गया जिसभानी। मारने लिए बुधि में है। हमउस पर विजय पावें। तुम्हारा तो है रूहानी बल। तुम विजय पाते हो रावण पर। जिससे तुम विश्व का मालिक बन जाते हो। तुम्हारे ऊपर कोई जीत पहन न सके। बेहद के बाप से बेहद का मिला हुआ वरसा तुम से आधा कल्प के लिएकोई छीन सके। और कोई को बापसे वरसा मिलता नहीं। तुम क्या बनते हो। थोड़ा विचार तो करो। बाप को बहुत ही प्यार से यादकरना है। और स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। दुनिय में यह कोई नहीं जानते विष्णु को स्वदर्शनचक्र क्यों दिया है। वह समझते हैं स्वदर्शनचक्र से सभी का सिर कटता है यह करता है। सिक्ख लोग भी जो अकाले होते हैंउनके पास भी हथियार रहते हैं। उन्हों ने फिर इसको ही स्वदर्शनचक्र समझ लिया है। तो मीठे2 बच्चों को बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चे तुम क्या थे अभी अपनी हाल तो देखो। भल कितने भी भक्ति आद करते हैं परन्तु भूल निकाल नहीं सकते। अन्मुख होकर देखो हमारे में कोई भूत तो नहीं है। कोई से दिल लगाई भाकी पहनी तो समझो चट खाते में गया। उनका तो मुंह देखना भी अच्छा नहीं लगता। वह जैसे कि अछूत बैठे हैं। स्वच्छ नहीं है। अन्दर में दिल खाती है बेराबर मैं अछूत हूं। बाप कहते हैं देह सहित सभी कुछ भूल अपने को आत्मा समझो। यह अवस्था रखने से ही तुम देवता बनेंगे। बहुतकहते हैं बाबा हाथ न लगाने से लड़ाई-झगड़ा होता है। कहती हैं क्या हम भंगी है। बाप कहते हैं अच्छे2 प्यार से उनको समझाना है। हाथ लगाना आद सभी छोड़ देना है। कोई भी भूत न आना चाहिए। बाबा बहुत समझाते रहते हैं। अपनी जांच करो। बहुतों में क्रोध है। गोली देने बिगर रह नहींसकते। तुमहरामजादी है ऐसी है, फिर लड़ाई चल पड़ती है, क्रोध बहुत खराब है। भूतों को भगाये एकदम क्लीयर होना है। शरीर भी याद न आये तब ऊंच पद पा सकते हैं। इसलिए 8रत्न गाये जाते हैं। तुमको ज्ञान रत्न मिलती है रत्न बनने लिए। भल भारत मेंकहते हैं 33करोड़ परन्तु उन में भी 8रत्न पास विथ आनर होते होंगे। उनको ही प्राईज़ मिलेंगी। जैसे स्कालरशिप मिलती है ना। तुम समझते हो मंजिल बहुत भारी है। चलते2 गिर पड़ते हैं। भूत की प्रवेशता हो जाती है। वहां विकार होता ही नहीं। तुम बच्चों की बुधि में सारा ड्रामा फिरना चाहिए। तुम जानते हो 5000वर्ष मेंकितने मास, कितने दिन, कितने घंटे, कितने मिनट, कितने सेकण्ड होते हैं। कोई हिसाबनिकाले तो निकल सकते हैं। फिर यह जो झाड़ है उन में यह भी लिख देंगे कि कल्पमें इतने वर्ष, इतने मास, इतने दिन, इतनेघंटे-इतने मिनट इतनेसेकण्ड होते हैं। मनुष्य कहेंगे यह तो बिल्कुल एक्युरेट बताते हैं। 84 जन्मों का हिसाब बताते हैं। तो कल्प की आयु का क्यों नहीं बतावेंगे। बच्चों को मुख्य बात तो बताई कि कैसे भी कर के भूतों को भगाना है। इन भूतों ने तुम्हारी बिल्कुल सत्यानाश कर दी है। सभी मनुष्य मात्र में भूत जरूर है। है ही भ्रष्टाचार की पैदाईश। वहां भ्रष्टाचारी होते ही नहीं। रावण ही नहीं। रावण को भी कोई समझते थोड़े ही हैं। तुम रावण पर जीत पहनते हो। फिर रावण होगा ही नहीं। अभी पुरुषार्थ करो। बाप आये हैंतो बाप का वरसा जरूर मिलना है। तुम कितना वारीदेवता बनते हो, कितना वारी असुर बनते हो। इनका हिसाब निकाल नहीं सकते। अनगिनत वार बनेंगे होंगे। शान्त में रहने से कब क्रोध नहीं आवेगा। बाप जो शिक्षादेते हैं उस पर अमल करना चाहिए। अच्छा। गुडमार्निंग।

डायरेक्शनः-
---------- पूना में जिस सेन्टर पर जनक बहन रहती थी वह मकान बदली करदूसरा लिया गया है जिसकी एड्रेस यह है :-

BRAHMA KUMARIS
18/322 Shanker Shet Road
Block No. 3
Opp. Mira Society Poona- 2
---